# ३. हड़प्पा संस्कृति


३.१ हड़प्पा संस्कृति
३.२ मकान और नगरीय संरचना
३.३ मुद्राएँ–बरतन
३.४ महास्नानागार
३.५ जनजीवन
३.६ व्यापार
३.७ ह्रास के कारण

**करके देखो ।**

भारत के मानचित्र प्रारूप में हड़प्पा संस्कृति के स्थानों के नाम लिखो ।

## ३.१ हड़प्पा संस्कृति

१९२१ ई.स. में पंजाब में रावी नदी के किनारे हड़प्पा नामक स्थान पर सबसे पहले उत्खनन प्रारंभ हुआ । अत: इस संस्कृति को 'हड़प्पा संस्कृति' नाम प्राप्त हुआ । इस संस्कृति को 'सिंधु संस्कृति' के नाम से भी जाना जाता है ।

हड़प्पा की दक्षिण दिशा में लगभग ६५० कि. मी. की दूरी पर सिंधु नदी की घाटी में मोहनजोदड़ो नामक स्थान पर उत्खनन हुआ । हड़प्पा और मोहन जोदड़ो स्थानों पर हुए उत्खनन में जिन वस्तुओं और वास्तुओं के अवशेष प्राप्त हुए; उनमें अद्‌भुत साम्य था ।

धौलावीरा, लोथल, कालीबंगा, दायमाबाद आदि

स्थानों पर भी हुए उत्खनन में ऐसे ही अवशेष पाए गए हैं ।

हड़प्पा संस्कृति की विशेषताएँ सामान्यत: सर्वत्र एक समान पाई जाती हैं । इनमें नगरीय संरचना, सड़कें, भवन निर्माण, जल निस्सारण अथवा गंदे जल का निपटारा, मुद्राएँ, बरतन, खिलौने, मृतशरीर को दफनाने की पद्धति आदि का मुख्य रूप से समावेश होता है ।

**बताओ तो !**

- अपने परिसर/गाँव के मकानों की संरचना कैसी है ?
- क्या वे मकान खपरैल, सपाट छतवाले अथवा ढालू छतवाले हैं ?

## ३.२ मकान और नगरीय संरचना :

हड़प्पा संस्कृति के लोगों के मकान और अन्य निर्माण कार्य मुख्य रूप से पक्की ईंटों से बने हुए थे । कुछ स्थानों पर निर्माण कार्य के लिए कच्ची ईंटों और पत्थरों का भी उपयोग किया जाता था । मकान के बीचोंबीच चौक और उसके चारों ओर कमरे बनाए जाते थे । इस प्रकार की संरचना मकानों की होती थी । मकानों के अहाते में कुएँ, स्नानगृह, शौचालय होते थे । गंदे जल का निपटारा कराने के लिए समुचित प्रबंधन किया जाता था । इसके लिए मिट्टी के पक्के परनारों का उपयोग किया जाता था । सड़कों की नालियाँ ईंटों से बनाई जाती थीं । ये नालियाँ ढँकी होती थीं । इससे यह स्पष्ट होता है कि हड़प्पाकालीन लोग स्वास्थ्य के प्रति कितने अधिक जागरूक थे ।

हड़प्पा संस्कृति का कुआँ

**बताओ तो !**

- गंदा जल बहा ले जाने वाली नालियाँ यदि ढँकी न हों तो स्वास्थ्य से संबंधित कौन-कौन-सी समस्याएँ निर्माण होती हैं ।

सड़कें चौड़ी और वे एक-दूसरे को समकोण में काटेंगी; इस प्रकार बनाई गई थी । परिणामस्वरूप चौकोन और रिक्त स्थान रह जाता था । इन रिक्त स्थानों में मकान बनाए जाते थे । नगरों के दो अथवा अधिक विभाग बनाए जाते थे तथा प्रत्येक विभाग स्वतंत्र परकोटे से संरक्षित रहता था ।

**करके देखो ।**

एक आलू लो । उसे बीच में से काटो । कटे हुए हिस्से पर कील की सहायता से कुछ अक्षर, आकृतियाँ उकेरो । अब इन अक्षरों और आकृतियों के उकेरे हुए हिस्सों को स्याही अथवा रंग में डुबोओ । उन रंगीन हिस्सों की कोरे कागज पर छाप लो । क्या होता है; इसका निरीक्षण करो ।

## ३.३ मुद्राएँ-बरतन

हड़प्पा संस्कृति की मुद्राएँ मुख्य रूप से चौकोर और स्टिएटाइट नामक पत्थर से बनाई जाती थीं । मुद्राओं पर विभिन्न प्राणियों की आकृतियाँ पाई जाती हैं । उनमें बैल, भैंस, हाथी, गैंडा, बाघ जैसे सचमुच के प्राणी तथा एक सींगवाले काल्पनिक प्राणी देखने को मिलते हैं । अन्य प्राणियों की आकृतियों की भाँति ही मनुष्य की आकृतियाँ भी पाई जाती हैं । इन मुद्राओं का उपयोग छाप लेने के लिए किया जाता था ।

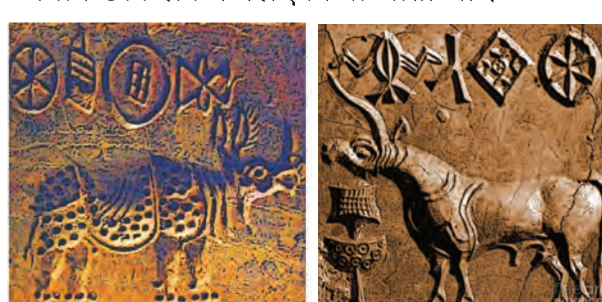

मुद्राएँ

**करके देखो ।**

मिट्टी के बरतन कैसे बनाए जाते हैं ; इसे समझने के लिए मिट्टी के बरतन बनानेवाले कारीगर से बातचीत करो ।

- किस मिट्टी का उपयोग करते हैं ?
- मिट्टी कहाँ से लाते हैं ?
- एक बरतन बनने में कितना समय लगता है ?

हड़प्पा संस्कृति के स्थानों पर हुए उत्खनन द्‌वारा विभिन्न प्रकारों और आकारों के बरतन पाए गए हैं । उनमें लाल रंग के पृष्ठभाग पर काले रंग से बनाए गए नक्काशीवाले बरतन हैं । नक्काशी के नमूनों के रूप में मछली की चोइयाँ, एक-दूसरे में पिरोए हुए वलय, पीपल के पत्ते जैसे प्रतीकों का समावेश है । हड़प्पा संस्कृति के लोग मृत व्यक्ति को दफनाते समय उस व्यक्ति के शव के साथ मिट्टी के बरतन दफना देते थे ।

बरतन

**निरीक्षण करो ।**

अपने परिसर के तैराकी तालाब पर जाओ। तालाब का पानी बदलने और तालाब में नए-से पानी भरने की प्रणाली का निरीक्षण करो ।

वर्तमान तैराकी तालाब और हड़प्पाकालीन स्नानगृह की तुलना करो ।

### ३.४ महास्नानागार

मोहनजोदड़ो में एक विशाल स्नानगृह पाया गया है। महास्नानागार का स्नानकुंड लगभग २.५ मीटर गहरा था । उसकी लंबाई लगभग १२ मीटर और चौड़ाई लगभग ७ मीटर थी । कुंड का पानी रिस न जाए; इसके लिए उसे भीतर से पक्की ईंटों से बाँधा गया था । उसमें उतरने की व्यवस्था थी तथा समय-समय पर कुंड का पानी बदलने की सुविधा भी थी ।

मोहनजोदड़ो का महास्नानागार

**बताओ तो !**

- अपने परिसर/गाँव में उगनेवाले फलों/फसलों के नाम लिखो ।
- अपने परिसर/गाँव के लोग कौन-कौन-से वस्त्रों का उपयोग करते हैं ?
- उन गहनों/आभूषणों के नाम लिखो; जो तुम्हें मालूम हैं ।

## ३.५ जनजीवन

हड़प्पा संस्कृति के लोग खेती करते थे । कालीबंगा में जोते हुए खेत का प्रमाण मिला है । कालीबंगा के लोग विभिन्न फसलें उपजाते थे । उनमें गेहूँ, जौ(बार्ली) प्रमुख फसलें थीं । राजस्थान में जौ की और गुजरात में मडुआ की फसल बड़ी मात्रा में उगाई जाती थी । इसके अतिरिक्त मटर, तिल, मसूर आदि फसलें उगाई जाती थीं । हड़प्पा संस्कृति के लोग कपास से अवगत थे ।

उत्खनन में पाई गईं मूर्तियों (पुतले), मुद्राओं पर अंकित चित्रों और कपड़े के अवशेष आदि के प्रमाणों के आधार पर मालूम होता है कि वे लोग वस्त्र बुनते थे । स्त्री-पुरुषों की वेशभूषा में घुटने तक का वस्त्र एवं ऊपरी दोपट वस्त्र का समावेश था ।

उत्खनन में विभिन्न प्रकार के गहने/आभूषण पाए गए हैं । वे गहने/आभूषण स्वर्ण, तांबा, रत्न तथा सीपियाँ, कौड़ियाँ, बीज आदि से बने हुए थे । बहुपरतोंवाली मालाएँ, अँगूठियाँ, बाजूबंद, और कमरबंद (करधनी) जैसे आभूषणों का स्त्री-पुरुष उपयोग करते थे । स्त्रियाँ भुजा तक चूड़ियाँ पहनती थीं ।

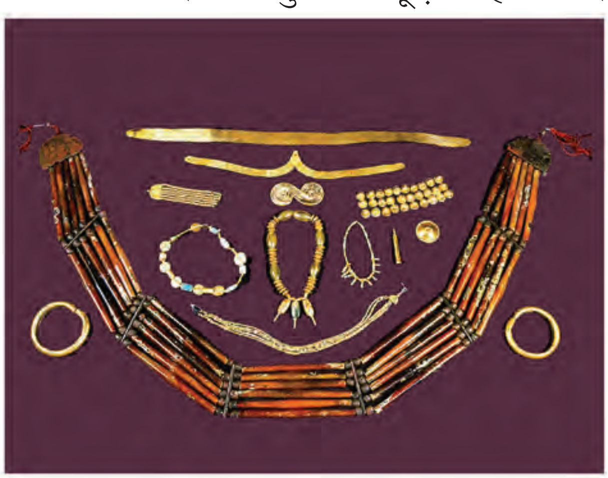

**हड़प्पा संस्कृति के आभूषण**

यहाँ पाया गया वैशिष्ट्यपूर्ण एक पुतला हड़प्पाकालीन कला का उत्कृष्ट नमूना है । उसके चेहरे का प्रत्येक भाव बहुत स्पष्ट है । यही नहीं बल्कि उसके द्वारा कंधे पर ओढ़ी हुई शाल तथा उस शाल पर अंकित त्रिदल की नक्काशी बहुत ही कलात्मक ढंग से दर्शाई गई है ।

**हड़प्पाकालीन कला का नमूना**

**करके देखो ।**

अपने समीप की पंसारी की दुकान पर जाओ । दुकानदार अपनी दुकान के लिए आवश्यक माल/सामान कहाँ से लाता है; इसकी जानकारी प्राप्त करो । उन वस्तुओं की सूची बनाओ ।

## ३.६ व्यापार

हड़प्पा संस्कृति के लोग भारत में तथा भारत के बाहरी देशों के साथ व्यापार करते थे । सिंधु नदी की घाटी में उत्तम श्रेणी की कपास होती थी । इस कपास का पश्चिम एशिया, दक्षिण यूरोप और इजिप्त देशों में निर्यात होता था । सूती वस्त्र का भी निर्यात होता था । इजिप्त को मलमल वस्त्र की आपूर्ति हड़प्पा संस्कृति के व्यापारियों द्वारा होती थी । कश्मीर, दक्षिण भारत, ईरान, अफगानिस्तान, बलुचिस्तान देशों से चांदी, जस्ता, बहुमूल्य नगीने, माणिक, देवदार की लकड़ी आदि वस्तुएँ लाई जाती थीं । विदेशों के साथ चलने वाला यह व्यापार सड़क और समुद्री मार्ग से चलता था । उत्खनन में पाई गईं कुछ मुद्राओं पर जहाजों के चित्र उकेरे गए हैं । लोथल नामक स्थान पर विशाल बंदरगाह पाया गया है । हड़प्पा संस्कृति का व्यापार अरब सागर के तट से चलता था ।

**लोथल का बंदरगाह (अवशेषों के आधार पर पुनर्रचना)**

### ३.७ ह्रास के कारण

निरंतर आनेवाली बाढ़, बाहरी समूहों के हमले, व्यापार में होनेवाला घाटा जैसी बातें हड़प्पा संस्कृति के ह्रास का कारण बनीं । इसी भाँति वर्षा की मात्रा कम हो जाना, नदियों के पाट सूख जाना, भूकंप, समुद्रीतल में होनेवाले परिवर्तन जैसे कारणों से भी कुछ स्थान उजड़ गए । इन कारणों से बड़ी मात्रा में लोग स्थलांतर कर गए और हड़प्पा संस्कृति के नगरों का ह्रास हुआ ।

हड़प्पा संस्कृति समृद्ध एवं संपन्न नगरीय संस्कृति थी । इस संस्कृति ने भारतीय संस्कृति की नींव रखी ।

## स्वाध्याय

**१. एक वाक्य में उत्तर लिखो :**

(१) इस संस्कृति को हड़प्पा नाम क्यों प्राप्त हुआ होगा ?

(२) हड़प्पा संस्कृति के बरतनों पर अंकित नक्काशी के नमूनों में किन प्रतीकों का समावेश है ?

(३) हड़प्पा संस्कृति के व्यापारी इजिप्त को किस वस्त्र की आपूर्ति करते थे ?

**२. प्राचीन स्थानों की सैर पर जाते समय क्या करोगे ?**

जैसे-स्थान के बारे में जानकारी प्राप्त करना, प्रदूषण की रोक-थाम करना, ऐतिहासिक साधनों का संरक्षण करना आदि ।

**३. मोहनजोदड़ो के महास्नानागार का चित्र बनाओ ।**

**४. निम्न तालिका में हड़प्पाकालीन जनजीवन की जानकारी लिखो ।**

| प्रमुख फसलें | वेशभूषा | गहने/आभूषण |
|---|---|---|
| (१) ---- | ---- | ---- |
| (२) ---- | ---- | ---- |
| (३) ---- | ---- | ---- |
| (४) ---- | ---- | ---- |

**५. एक शब्द में उत्तर दो । ऐसे प्रश्न तुम स्वयं तैयार करो और उनके उत्तर लिखो :**

जैसे- हड़प्पा संस्कृति की मुद्राएँ बनाने के लिए उपयोग में लाया गया पत्थर ।

**६. हड़प्पा संस्कृति की समकालीन अन्य वैश्विक संस्कृतियों को संसार के मानचित्र प्रारूप में दर्शाओ ।**

**उपक्रम :**

(१) तुम अपने विद्यालय का प्रारूप बनाओ और उसमें विद्यालय के विभिन्न स्थानों को दर्शाओ ।

जैसे- ग्रंथालय, मैदान, संगणक कक्ष आदि ।

(२) अपने गाँव और घर की अनाज भंडारण पद्धति पर विस्तार में एक टिप्पणी लिखो ।

* * *

**हड़प्पाकालीन खिलौने**